मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 81, मार्च(द्वितीय), 2020

धूप-छांव

[यात्रा संस्मरण - भाग 3]

तुलसी देवी तिवारी

सुबह दोपहर की ओर बढ़ रही थी अभी तक पेट पूजा नहीं हुई थी। हमने मंदिर के पास की दुकान से हल्का-फुल्का भोजन मंगवा लिया। इस समय कमरा गर्मी से तप रहा था। इतना कि जी बेचैन हो रहा था। योगेश ने हमारे लिए ऊपर ही एक बड़ा कमरा ले लिया था जिसमें कई पलंग बिछ सकते हैं। हमारे लिए चार पलंग बिस्तर सहित मिल गया था। पंखा चल रहा था किन्तु वह भी गरम हवा उगल रहा था। हमने प्रातःकाल सुखाये गये अपने कपड़े उठाकर रखा।

आज की शाम आस-पास के दर्शनीय स्थलों को देखने का कार्यक्रम बनाया गया। सुबह वाले ऑटो चालक प्रमोद शर्मा का नंबर योगेश के पास था, उसे बुला लिया गया। हम लोग तीन बजे के लगभग तैयार होकर कमरे से बाहर निकले।

पुलिस चैकी के पास शर्मा खड़ा मिल गया।

''किधर चलेंगे सर जी'' ? उसने योगेश से पूछा।

''आप यहाँ के रहने वाले हैं, अपनी समझ से हमें मथुरा दर्शन करा दीजिए''। योगेश ने उसे विश्वास में लेते हुए कहा।

''ठीक है चलिए पहले द्वारिकाधीश जी के मंदिर चलते हैं''। उसने अपनेपन से कहा। ऑटो में बैठे हम मथुरा की सड़के उसके दोनों ओर सजी दुकानें, जत्थे के जत्थे आते जाते दर्शनार्थी सब कुछ देख रहे थे। द्वारिकाधीश का मंदिर पुरानी मथुरा नगरी में है। सड़क अधिक चैड़ी नहीं है। एक मोड़ पर शर्मा ने हमे ंउतार दिया - ''बस अब इसके आगे ऑटो एलाऊ नहीं है''। आप लोग पैदल चले जायंे या रिक्शा ले लें''।

हम लोग काफी दूर पैदल चले पता चला कि मंदिर अभी एक किलोमीटर दूर है। हमारी हालत देखकर योगेश ने दोनों बच्चों के साथ मुझे रिक्शे पर बैठा दिया और

स्वयं अनिता के साथ पैदल-पैदल आने लगे। हमने रास्ते में कई ऑटो देखे जो निर्बाध आना-जाना कर रहे थे। हमें शर्मा पर गुस्सा आ रहा था। ''हमें बेवकूफ बना रहा है लगता है, मैंने सोचा। गली में जहाँ द्वारिकाधीश जी का मंदिर है मैं अमन नमन के साथ खड़ी होकर अपने बेटे बहू की प्रतीक्षा करती रही।

मंदिर के बाहरी भाग का दर्शन सुलभ था मेरे लिए। लगभग आठ फुट की कुर्सी पर श्री द्वारिकाधीश जी का भव्य मंदिर निर्मित है। ऐतिहासिक तथ्य है कि श्रीकृष्ण जन्मभूमि का मंदिर जब औरंगजेब ने तोड़ दिया, तब उसके विकल्प के रुप में गुजराती वैश्य श्री गोकुलदास पारिख ने असकुण्डा घाट के पास सन् अठारह सौ चैदह पन्द्रह के लगभग इसका निर्माण कराया। इस मंदिर के पास पर्याप्त अचल सम्पत्ति है, मंदिर के चारों ओर दुकानें हैं जिनके किराये से द्वारिकाधीश जी की सेवा पूजा निर्बाध रूप से होती रहती है। मन प्रेम मग्न हो रहा था। बच्चे साथ थे इसलिए मैंने अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर रखा था। मंदिर में भीड़ बढ़ती जा रही थी। सीढ़ियों पर चप्पल, जूतों के अंबार लग गये थे। कुछ सुवेशी बुजुर्ग सीढ़ियों पर बैठकर इनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी का निर्वहन कर रहे थे।

जी उकता रहा था मेरे बेटे बहू दूर से नजर आये। हमने नियमानुसार जूते, चप्पल सीढ़ी पर उतारे और माथा टेककर मंदिर में प्रवेश किया। कलात्मक विशाल द्वार पारकर हमने मंदिर की स्थापत्य कला के दर्शन किये, अनेक मजबूत खंभों के ऊपर मध्य में विस्तृत मंडप है। जिसमें विविध वर्णी कलाकृतियाँ एवं शीशे का काम देखकर मन वहीं रम जाने का हो रहा था। हमारे सम्मुख द्वारिकाधीश जी महराज की श्याम वर्णी स्वर्णाभूषणों, सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित मूर्ति विराज रही थी। प्रभु की शक्ति सम्पन्न चारों भुजाएँ दिव्य आयुधों से सुसज्जित थीं। उनकी बाईं ओर श्वेत स्फटिक की रूकमणी जी की दिव्य प्रतिमा स्थापित है। हमने नतमस्तक होकर विश्वपिता एवं विश्वमाता के दर्शन किये। हमारे आगे पीछे बहुत से दर्शनार्थी थे, उन्हें भी प्रभु के दर्शन की उत्सुकता थी, मन में द्वारिकाधीश की छवि बसाये हम लोग मंदिर से बाहर आने लगे। पुष्टिमार्गीय गोसाई प्रभु की सेवा पूजा में संलग्न थे। पाकशाला से क्षुधावर्धक सुगन्ध आ रही थी, प्रभु के लिए भोग निर्मित हो रहा था।
हम लोग रिक्शें से वहाँ आये जहाँ शर्मा को ऑटो के साथ छोड़ा था
''अरे यार ! ऑटो रिक्शा सब तो आ जा रहे है तुम कैसे रुक गये''। योगेश ने जैसे मेरे मुँह की बात छीन ली।

''सर जी, मैं अभी अभी लखनऊ से आया हूँ पुलिस वाले माँ बहन एक करते हैं अपने से सहन नहीं होता, होर लोगांे ने सेटिंग कर रखी है, इसीलिए जाते हैं''। शर्मा ने अपनी विवशता स्पष्ट की।
शर्मा आगे हमें दसभुजी विनायक मंदिर, माता काली जी के मंदिर के दर्शन कराता विश्राम घाट ले आया।

दो वर्ष पहले मैंने यमुनोत्री जाकर यमुना जी के अवतरण का अद्भुत दृश्य देखा था। गगनचुंबी ऊँचाई से गिरता जल, अग्निकुंड में उबलता पानी जिसमें कच्चे चावल से भात बनाकर प्रसाद बनाया जाता है। दो वर्ष पहले ही दिल्ली में यमुना नदी के दर्शन कर रो पड़ी थी, वह गंदे से नाले जैसी दिख रही थी जैसे अपनी सुन्दर सी बेटी को किसी ने निर्दयतापूर्वक घूरे पर फेंक दिया हो। मैंने सुन रखा था कि मथुरा में भी यमुना प्रदुषित हो गई है। प्रदुषण रूपी कालियानाग यमुना जल को जहरीला कर रहा है। प्रभु को फिर आना पड़ेगा यमुना का उद्धार करने, उम्मीद अच्छी नहीं थी किन्तु विश्राम घाट पर जाकर देखा तो लबालब भरी श्यामवर्णी यमुना, उस पर तैरती सुसज्जित नौकाएँ, नौका विहार करते सैलानी, भीड़ भाड़, लोग सीढ़ियों पर बैठे यमुना जी की आरती की प्रतीक्षा कर रहे थे। वर्षाऋतु होने के कारण अथवा किसी अन्य प्रबंध के कारण यमुना जी नीर आपूरित अपने भक्तों के मन में आनंद का संचार कर रहीं थीं।

पंडे अपने रोजी रोजगार में संलग्न थे, ''आईये माता जी यमुना जी की पूजा कर लीजिए, बड़ी पूजा 2100 रू. में होगी सामान पूरा यहीं से मिलेगा''। हमने विस्तार में न जाकर 101 रू. में साधारण पूजन किया। दक्षिणा देकर पंडे महराज को संतुष्ट किया। विश्राम घाट पर बने यमुना जी के मंदिर के दर्शन कर मैंने यमुना जी के उस पार देखने का प्रयास किया, एक विशाल द्वार दृष्टिगोचर हुआ, धंुधला सा। पता चला कि यहीं से वसुदेव ने नवजात पुत्र के साथ यमुना पार कर उसे गोकुल पहुँचाया था। बाद में कंस वध के पश्चात् कृष्ण ने यहीं विश्राम किया था। इस घाट का पौराणिक महत्व समझ में आया। उस पार गोकुल बसा था इस पार मथुरा। ग्रीष्म में जब जल कम रहता होगा लोग पैदल आवागमन करते होंगे। भरी बरसात में वसुदेव जी अपने हृदय के टुकड़े को लेकर पैदल ही यमुना पार हुए थे। उधर गोकुल, यहाँ असंख्य गायें, पाली जातीं थीं, दूध, दही, धृत, कर के रूप में कंस को दे दिया जाता था। छाछ गोपालों के हिस्से आती थी। माखन चोरी के बहाने कान्हा ने वास्तविक अधिकारी को उसका अधिकार दिलाया बचपन से मुझे शिकायत थी कि गोविन्द अपनी माँ से मिलने दुबारा नहीं आये हैं। बड़ी क्रूरता की यशोदा जैसी ममतमयी माता को सन्तान वियोग देकर। राधा की विरह विदग्ध पुकार उन्हें कर्ण गोचर क्यों नहीं हुई ? यही स्वयं को भक्त वत्सल कहते हैं? परन्तु अब उम्र के इस पड़ाव पर समझ में आ रहा है कि वृन्दावन से कंस के बुलाने पर मथुरा आने के बाद कृष्ण बलराम किन झंझटों में फंस गये थे ? कंस का वध, नाना शूरसेन का अभिषेक उसके तत्काल बाद मगध नरेश जरासंध का आक्रमण जो कंस का श्वसुर था लगातार 17 आक्रमण। प्रजा को बचायें या नगर को। धन बचायें या अपना स्वाभिमान ! दूर ! बहुत दूर! समुद्र के अन्दर द्वारिका नगरी बसाना, सारी प्रजा, पशुधन, कला संस्कृति के साथ मथुरा से पलायन, राजनैतिक कारणों से बढ़ते विवादों की संख्या, सोलह हजार एक सौ आठ पटरानियों

की व्यवस्था पृथक भवन, दास-दासियों, नाते-रिश्तेदारों, सबका योगक्षेप वहन करते कृष्ण, बुआ के परिवार की पंचायत, भीषण महाभारत, माँ ने तो पुत्र को पाल दिया उसका दायित्व समाप्त, पुत्र तो बंध गया जंजीरों से। अब चाहे वह साधारण मानव हो या सबकी जंजीरे काटने वाला परब्रम्ह परमेश्वर हो, यदि संसार में आया है तो ले ले आनंद इस लोक का भी।

यशोदा के आँचल की छांव हेतु तरसता तो था उनका मन ! परिस्थतियों ने उनको वेणु लेकर वन में भागने से रोक दिया।

सब कुछ तब अधिक समझ में आया जब पिताजी की बीमारी के समय मैं चाहकर भी उतनी सेवा न कर सकी जितने के वे अधिकारी थे। परिस्थितियों ने जाल बिछाया चहार दीवारी की एक दीवार अपने आप गिर गई, जो अन्दर ही अन्दर मन को डराने लगी ''कहीं पिताजी के प्रयाण का समय तो नहीं आ गया''? नहीं....नहीं..... इस अशुभ दीवार को कल ही ठीक करा दूँगी। ईट सीमेन्ट, रेत, मजदूर, सब तरफ दौड़ो, पिताजी की तरफ दौड़ो! क्या कर रहे हैं? सो रहे है।, कपड़े बटोर कर पलंग पर इकट्ठा कर लिया है। यह क्या तिरछे हो गये हैं''। सा◌ीधा कर दूँ, चादर ठीक कर सिर के नीचे तकिया लगा दूँ, चादर ओढ़ा दूं ! ...हाँ अब उधर देखूँ, भोजन का क्या हुआ....अरे तकदीर की मार ! रोज भोजन बनाने वाली भोजन नहीं बना रही है इन दिनों, किसी के बाप का ठेका थोड़े ही ले रखा है, किसी ने''? और भी कर्तव्य हैं पति उम्रदराज, बच्चे, नौकरी, व्यवसाय वाले, भोजन के बिना कितने दिन चलेगा ? अरे... घंटे भर हो गया क्या कर रहे होंगें पिताजी? चक्कर धिन्नी बन गयी थी पूरी तरह।

''अब तो लगता है, सब कुछ छोड़कर उनके साथ ही रही होती तो कितना अच्छा लगता उन्हें'' ? मोहन के साथ तो पूरे विश्व की समस्यायें थीं अब किस मुँह से उन्हें निर्मोही कहूँ ?

हम लोग आरती के समय तक नहीं रुक पाये शर्मा आना-कानी कर रहा था, हम लोग भी पुण्य लाभ से अधिक मथुरा के भूगोल से परिचित होने के आकांक्षी थे अतः हम वहाँ चल पड़े जहाँ शर्मा ऑटो ले◌ेकर खड़ा था, चाय, का◌ॅफी की आवश्यकता अनुभव हो रही थी, गलियों में घुमते मुड़ते मुख्य मार्ग पर पहुँचे। उस समय तो मन बड़ा खिन्न हुआ,जब बड़े सुन्दर-सुन्दर मंदिरों एवं भवनो को भग्नावथा में देखा पर अब याद आ रही है, बाढ़ के कारण ये भवन टूटे होंगे, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री का प्रलयकारी जल आखिर मैदानों सें होकर ही तो सागर सखा से मिलने गया होगा?

एक छोटे से ठेले में दोहरे बदन के गौरांग बुजुर्ग बैठे थे माथे पर रक्त चंदन का तिलक शोभा पा रहा था। चेहरे की रंगत देखकर लगता था हवा के स्पर्श से ही रक्त छलक पड़ेगा। उन्होंने लक-दक सफेद रंग की धोती और बंडी पहन रखी थी। सामने स्टोव्ह के साथ ही चाय बनाने का सामान रखा था।

''भैया, काॅफी चाय मिलेगी'' ? मैंने सकुचाते हुए पूछा।

''हाँ क्यों नहीं ? कितने बनाऊँ'' उन्होंने सहज ढंग से पूछा।

''एक काॅफी, चार चाय''। मैंने बताया।

''माँ! लगता है कहीं के महंत हैं, बेच रहे हैं चाय'' मुझ जैसे ही विचार योगेश के मन में भी उथल पुथल मचा रहे थे।

''सब गोविन्द की माया है बेटा ! यहाँ के भिखारियों पर भी उनकी विशेष कृपा सदा रहती आयी है। ये चाय से ही इतना कमा लेते होंगे कि आराम से योगक्षेम का निर्वहन हो जाय''। मैंने धीमे स्वर में कहा।

पहले उन्होंने मुझे काॅफी का कुल्हड़ पकड़ाया, फिर सभी को चाय दी। चाय काॅफी बेहद स्वादिष्ट थी, हमने नवीन स्फुर्ति का अनुभव किया।

इसके बाद हमने अपने ठहरने के स्थान अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय धर्मशाले का रुख किया। लंबी यात्रा से हम सभी थके हुए थे। अतः नगर का भ्रमण करते हुए रास्ते से ही कुछ खाते पीते वापस आये।

रात्रि के प्रथम प्रहर तक हम लोग जन्मभूमि के पास पहुँच गये थे।

मंदिर से संध्या आरती की पावन ध्वनि गूंजित हो रही थी। आज का दिन गर्मियों की भांति गर्म रहा, सारा कमरा गर्मी से तप रहा था। पंखे की हवा भी आग उगल रही थी। फिर भी हम लोग कुछ देर लेट गये। अनिता एक कुशल गृहणी है उसने बच्चों को कुछ खिलाया-पिलाया मुँह हाथ धुलाकर आराम करने को कह दिया।

''सोना तो रोज है, प्रभु के सानिध्य में चलना चाहिए, ऐसा सोचकर मैंने एक बार पुनः स्नान किया, हृदय की थाली में भावों के पुष्प सजाये अकेली ही मंदिर की ओर चल पड़ी।

इस समय पंक्ति स्थल लगभग खाली ही था, महिलाओं की ओर जाकर मैंने मोबाईल, केमरा, आदि जमा करा दिया। महिला पुलिस की आपत्तिजनक जाँच बरदास्त की और अन्दर प्रविष्ट हो गई। इस समय मन प्रातः की भाँति व्यग्र न था, आराम से एक-एक संरचना देखने, एक-एक मूर्ति की आँखों में झाँकने का विचार था मेरे मन में।

केशवदेव के दर्शन करते हुए मैंने माँ महामाया, गर्भगृह, तथा, भागवत् भवन को नयन भरकर देखा। इतनी महान् पुण्यभूमि ने जब इतने बुरे दिन देखे तो मनुष्य क्या है ? आक्रान्ता इस बात से भिज्ञ थे कि मनोबल टूट जाने से आदमी जिन्दा रहते हुए भी मुर्दा हो जाता है इसीलिए अवतारों के जन्म स्थान भग्न कर वहाँ अपने धार्मिक स्थल बना लिए, केशवदेव मंदिर के सामने एक बजुर्गवार जन्मभूमि से संबंधित साहित्य बेच रहे थे, मैंने अविलंब उन्हें क्रय कर लिया, परिसर का एक-एक अंग दुधिया रोशनी से जगमगा रहा था। सभी मंदिरों से आरती प्रार्थना आदि की ध्वनि मन मोह रही थी। ऐसे समय कोई भजन भी तो याद नहीं आता जिसे गाकर अपने भाव व्यक्त किया जा सके।

चैतन्य महाप्रभू के दर्शन करते मैंने भागवत् भवन में प्रवेश किया। यहाँ की व्यवस्था, भव्यता एवं पवित्रता मन को आनंद विभोर करने वाली थी।

स्वामी अखंडानंद सरस्वती जी के सभापतित्व में मथुरा के युवकों ने 15 अक्टूबर 1953 से श्रमदान के रूप में कटरा केशवदेव के पुनरूत्थान का कार्य प्रारंभ किया। वर्षों श्री बाबूलाल बजाज तथा फूलचंद खण्डेलवाल के नेतृत्व में कार्य चलता रहा। बाद में गर्भगृह तथा भव्य भागवत् भवन का पुरूद्धार व निर्माण कार्य प्रारंभ होकर फरवरी 1982 में पूर्ण हुआ।

यह भागवत् भवन भारतीय नीति, धर्म, संस्कृति और दर्शन का साकार विग्रह जान पड़ता है।

यहाँ प्रवेश द्वार पर दाईं ओर गद्दी लगी है जिस पर पंडित जी बैठे थे व भक्तों को वांछित जानकारी प्रदान कर रहे थे। बाईं ओर श्री बलराम, सुभद्रा, श्री जगन्ननाथ का काष्ट विग्रह जगन्नाथ पुरी पहुँचने की अनुभूति प्रदान कर रहा था। इन विग्रहों के सम्मुख ही भावपूर्ण मुद्रा में चैतन्य महाप्रभू विराजमान हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार विग्रह का निर्माण उसी भगवत् कृपा पात्र कारीगर ने किया है जो पुरी में विग्रह निर्माण करता है। काष्ट भी निम्ब का है।

मध्य में श्री राधा कृष्ण युगल सरकार का मानवाकार श्वेत संगमरकर निर्मित, अद्भुत सिंगारित विग्रह विराज रहा है जिसके दर्शन मात्र से त्रय तापों का शमन हो जाता है। मैं आँखें फाड़े विश्व माता-पिता के दर्शन कर रही थी जो पति-पत्नी नहीं हैं परन्तु उनका प्रेम, उनकी सेवा, उनकी शक्ति, उनके विचार इस कदर घुले मिले हैं कि दोनों को पृथक करना असंभव है। एक भजन में ठीक ही गया है -

राधा रानी, मिसरी तो स्वाद हैं बिहारी राधे, राधे
राधारानी गंगा तो धार हैं बिहारी।
राधारानी फूल हैं तो खुशबू बिहारी।।
राधा रानी जिंदगी तो प्राण है बिहारी।। राधे, राधे

अतुलनीय मैत्री, अतुलनीय सामंजस्य जहाँ भिन्नता चाहे जैसी भी हो, लैंगिक हो, चाहे जाति, धर्म, वर्ग आदि की हो अपना अस्तित्व खो देती है। राधा रानी, कान्हा से बड़ी थीं, रिश्ते में मामी लगती थीं सहज सख्य भाव विकसित करने वाला रिश्ता था दोनों में, पुतना, अधासुर, वकासुर, कालिया मर्दन, गोचारण, माखन चोरी आदि लीलाओं की सहज समर्थिका, वे भी मानतीं थीं कि आततताई का राज्य समाप्त होना चाहिए। आत्मरक्षा में वध पाप नहीं, जल प्रदुषण करने वालें पर्यावरण को हानि पहुँचाने वालों का विरोध हो। गोपालक समुदाय के बच्चों का दूध माखन पर पहला अधिकार हो।

गोवर्धन पूजा के समय उन्होंने सम्पूर्ण गोकुल वासियों को उत्साहित कर पशु, अस्त्र-शस्त्र, जीवनोपयोगी वस्तुओं के साथ गोवर्धन की छाया में पहुँचाया जिसे मोहन ने अपनी कनिष्टिका पर उठा रखा था। दूसरे हाथ में बांसुरी थी, जो होठों से लगकर

मोहक धुन उत्पन्न कर रही थी, गोकुलवासियों के लिए तो यह उत्सव और आनंददायक हो उठा था। कंस के कपटपूर्ण आमंत्रण पर सबके साथ राधा ने भी अश्रुपूर्ण नेत्रों से उन्हें विदा किया। न मार्ग रोका, न प्रेम की शपथ दी, न भला-बुरा कहा बस मोहन के कत्र्तव्य का मार्ग प्रशस्त किया। उनके जाने के पश्चात् विरहदग्ध गोप गोपियों, माता यशोदा, नंदबाबा को भाँति-भाँति से धैर्य देती, उनकी सेवा में संलग्न रही। अपनी पीड़ा लेकर नहीं बैठी बल्कि मोहन के प्रियजनों में उन्हें देखकर जीने लगी, उनके एक-एक विवाह की सूचना पाकर मंगलदीप जलाये, एक एक सफलता पर हर्ष के आँसू बहाये, राधा रानी ने अन्य स्त्रियों की भांति, पत्नी की गरिमा या मोहन के संतति की माता होने का गर्व, आर्थिक, सामाजिक सुरक्षा और तो और प्रेम के प्रतिदान की वांछा भी नहीं की। माता कंस से त्रसित थीं, उन्हें पुत्र से अपने उद्धार की अपेक्षा थी, यहाँ तक महारानी रूक्मणी ने भी अवांछित पति से सुरक्षा हेतु श्रीकृष्ण के लिए प्रार्थना पत्र भेजकर उन्हें आमंत्रित किया था। कान्हा ने विवाह के बाद सभी के साथ उचित व्यवहार किया, उनकी अपेक्षाएँ पूरी करते रहे। एक अच्छे पुत्र, एक अच्छे, पति, पिता, राज्य संरक्षक, धर्म संस्थापक, अभिन्न सखा, युद्ध नीति के पंडित, योगेश्वर श्री कृष्ण। परन्तु कृष्ण को समझने वाली तो राधे जी ही थीं, तभी तो उनका स्थान कान्हा के पाश्र्व में है। कोई अन्य स्त्री इस स्थान की अधिकारिणी नहीं हो सकी। न माताएँ, न धर्म पत्नियाँ, राधा जी के त्याग ने उन्हें कृष्णमय बना दिया, जहाँ वियोग का कोई स्थान नहीं था। स्त्री पुरूष सख्य को शीर्ष स्थान पर स्थापित करने की यह एक अद्वितीय कथा है। जिसने कुछ नहीं चाहा उन्हें सबसे ऊँचा स्थान दिया भक्तों ने, भक्ति का साकार विग्रह राधा रानी, जिनके बारे

यह टीका, ये बिन्दियों की सजावट, दोनों के मध्य वेणु ! कृष्ण के कंधे की ओर किंचित झुका राधा जी का सिर ! लगता है जैसे, जीवन संग्राम में विजयी, दुघर्ष योद्धा जो विजय से संतुष्ट किन्तु अविराम संघर्ष से स्लथ किंचित विश्राम हेतु अपने परम आश्राय का सहारा ले रहा हो।

मेरा मन लोट-लोटकर राधा रानी के प्रेम का, उनके त्याग का, उनके समर्पण का गुणगान करना चाह रहा था, जिह्वा मूक थी, आँखें नम थीं, कभी आँखें खोलकर दिव्य छवि का रसपान करती कभी नैन पट बन्द कर उन्हें मानस में बंदी बनाने का असफल प्रयास करती।

आरती हो रही थी, श्री विग्रह को इतना बड़ा हार पहनाया गया कि घुटनों से नीचे तक आ रहा था। लोग झांझ मंजीरे के साथ आरती गा रहे थे -
आरती कुंज बिहारी की, गिरधर कृष्ण मुरारी की,

जहाँ से प्रकट भई गंगा, कलुष कली हारिणी श्री गंगा,शंख, घड़ियाल की ध्वनि मुझे किसी अन्य लोक में ले जा रही थी। भक्तिमय वातावरण में लग रहा था जैसे साक्षात् राधे कृष्ण मुस्करा रहे हों सम्मुख। अपने संबंध में मेरे विचारों से अवगत

होकर। जब आरती और जयकारे का कार्यक्रम सम्पन्न हो गया तब मुझे विवशतः अन्य श्रद्धालुओं के लिए स्थान रिक्त करना पड़ा।

केन्द्रीय विग्रह के दाहिनी ओर श्री सीता राम - लक्ष्मण जी विराजमान हैं। श्री राम मंदिर के एकदम सामने भक्त शिरोमणि पवनपुत्र करबद्ध विराज रहे हैं जिनके समान भक्ति का अन्य उदाहरण दुर्लभ है। बाल्यकाल में नाच-नाचकर प्रभू को रिझाया, जहाँ वाहन की आवश्कता हुई पीठ पर चढ़ा लिया, वानरराज सुग्रीव से मैत्री स्थापित करायी, जिसकी सेना, बिना आवास, भोजन के प्रभु कार्य हेतु तत्पर हुई। सीता की खोज से लेकर प्रबल शत्रु रावण, मेघनाथ, कुंभकर्ण से रक्षा की युक्ति के सफल प्रयोगकर्ता, संजीवनी लाकर लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा करने वाले, नागपाश से छुड़ाने के लिए गरुड़ को लाने वाले, अहिरावण के बंधन से दोनों भाइयों को छुड़ाने वाले वीर हनुमान् राज्याभिषेक के पश्चात् श्रीराम के चरणों में रहकर उनके राज्य, प्रजा और वंश का संरक्षण करते रहे, अपने लिए तो जीवन का एक पल भी व्यतीत नहीं किया। तभी तो माता जानकी ने 'अजर-अमर सुत होहू तुम्ह, बलबुद्धि निधान' का वर दे दिया। हम उनकी कृपा के द्वारा ही प्रभु तक पहुँच सकते हैं क्योंकि प्रभु श्रीराम कहते हैं पहले भक्त तब भगवान्।

आगे भगवान् केशवेश्वर का अद्भुत पारदलिंग भक्तों के दशनार्थ स्थापित है वनस्पितियों के रस को ठोस किया गया है, जिससे इस लिंग को आकार दिया गया है। भोलेबाबा की कृपा के बिना अवांछित का संहार न राम कर सकते थे न कृष्ण क्योंकि वे ही तो महाकाल हैं, जो विषमताओं को नष्ट कर नवीन निर्माण का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

कक्ष धीरे-धीरे विरल होता जा रहा था। आरती के पश्चात् प्रसाद लेकर लोग अन्य दर्शनीय विग्रहों की ओर जा रहे थे। मुझे लगा कि विलंब हो रहा है। मेरा पुत्र मेरे लिए चिन्तित होगा। रात्रि भोजन की भी व्यवस्था करनी थी। घर तो था नहीं जहाँ मेरी बहू मन भावन रसोई तैयार कर देती। मैं वापसी के लिए मुड़ी किन्तु बार-बार मुड़-मुड़कर देख रही थी।

धर्मशाले आकर हमने हल्का-फुल्हा आहार लिया, बच्चे बहुत थके हुए थे, वे जल्दी सो गये। अनिता को घर से ही सर्दी जुकाम था, यहाँ आकर और बढ़ गया था। वह दवा ले रही थी किन्तु खांसी थी कि उसे साँस भी लेने नहीं दे रही थी। एक नये स्थान पर रात्रि में मैं कुछ भी नहीं कर पा रही थी।

गर्मी के कारण कक्ष में रहना बड़ा कष्टप्रद था, मैं बरामदे में जाली वाली उस खुली खिड़की के पास आकर बैठ गई जो एक छोर से दूसरे तक चली गई थी, वहाँ से सामने का सब कुछ स्पष्ट दिखाई दे रहा था। कचनार की छाया के नीचे बने चबुतरों पर अब यात्रियों का दूसरा दल आ चुका था, वे भोजन कर रहे थे। चेक पोस्ट पर

आगन्तुकों की जाँच हो रही थी। पुष्ट कृष्ण वृषभ परिसर में अलमस्त टहल रहा था। कचनार के सारे पत्ते स्थिर थे जैसे कुछ विचार कर रहे हों।

एक बूढ़ी सी महिला बड़ी तेजी से अपना ट्राली बैग लिए आई और झटपट एक चटाई डालकर बैग सिर के नीचे लगाकर लेट गई। मैं अचंभे में पड़ी सब कुछ देख रही थी। इतनी सहजता से तो कोई आज के युग में अपने घर के आँगन में भी नहीं सोता होगा। मेरे मन में बार बार विचार आ रहा थ कि मैं भी एक तकिया लेकर जहाँ बैठी हूँ वहीं सो जाऊँ, परन्तु संकोच ने मुझे ऐसा करने न दिया, शायद सोने चाँदी के आभूषणों के लुट जाने का भय हो या नींद में शरीर अनावृत हो जाने का, आखिर वह एक सार्वजनिक धर्मशाला थी। कभी अपने परिवार की याद आकर मन के द्वार खटखटा जाती, कभी बी.ई.ओ. साहब की आवाज हृदय छेद जाती 'तुम्हें देखकर मुझे सररम आती है, किसने चुन लिया तुम्हें राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए'।

कभी पति की प्रसन्नता भरी आँखें याद आतीं, जिन्होंने मेरी तरक्की के लिए अपने सुखों का त्याग किया, मुझे शिखर पर देखकर उनकी दशा का वर्णन मुश्किल हो रहा था और बच्चे जो अनजाने ही रूष्ट हो गये थे, मेरे मन में पीड़ा का संचार हो रहा था, घड़ी-घड़ी रूप बदल-बदलकर। जागते झपकी लेते ही रात कटी।

दिनंाक 1-9-2014

प्रातः पाँच बजे से ही मंदिर से आने वाली भजन की ध्वनि ने जैसे मुझे पुकारा, अनिता को कुछ समय पूर्व ही थोड़ा आराम मिला था, वह सो रही थी, मैं जल्दी उठी नित्य क्रिया से निवृत्त हो पुनः मंदिर में पहुँच गई। इस समय मंदिर में कुछ भिन्न अनुभूति हो रही थी, ज्यादा भीड़ भाड नहीं थी, सूर्यबालाएँ आहिस्ता आहिस्ता धरती पर पग रख रही थीं, शायद उन्हें डर था कि उनकी पग ध्वनि सुनकर पुष्पों का रसापान करते भ्रमर उड़ जायेंगे।

मंदिर की स्वच्छता का कार्य पूर्ण हो चुका था। चटाइयाँ बिछ गईं थीं। आज मैं पुनः केशवदेव मंदिर की तरफ वाली सीढ़ियों से ही ऊपर चढ़ी। सीढ़ियों के दाहिनी ओर 30 ग 50 फीट की एक विस्तृत छत है, छत पर लगे बगीचे से जुड़ी हुई, वहाँ का दृश्य देखकर मैं आनंद से बावली हो गई। हजारों की संख्या में स्लेटी रंग, पूंछ पर काली सफेद धारियों वाले कबूतर वहाँ बैठे हुए थे। बगल में ही कबूतरों का दाना बिक रहा था। जैसे ही कोई दाना फेंकता कबूतर एक साथ पंख फड़फड़ाते आकाश में उड़ जाते।

दूसरे ही पल छत पर उतर आते, झटपट दाना चुगते, किलो दो किलो दाना चुगने में उन्हें एक मिनट भी नहीं लगता, फिर पंख फड़ फड़ाकर, कुछ वृक्षों पर, कुछ मंदिरों की छतों पर और सबसे ज्यादा मस्जिद पर जाकर बैठ जाते। कुछ पल सब कुछ देख समझ कर मैंने भी कबूतरों को दाना डाला, उन्हें उड़ते देखा ''ये ही अच्छे हैं, न मस्जिद बनाने के लिए किसी मंदिर को तोड़ते हैं, न किसी के दाने को अछूत का

समझकर खाने से मना करते हैं। इनके लिए दोनों बराबर हैं, ये ही ईश्वर के सच्चे भक्त हैं।'

छत पर गेहूँ की दलिया, ज्वार, बाजरा, जोन्धरी बिखरी हुई थी कबूतर आ रहे थे, खाकर उड़ रहे थे और लोग उनकी प्रसन्नता देखकर अपने जीवन में सुख-शांति का अनुभव कर रहे थे। मैं बड़ी देर तक देखती और सोचती रही, क्या क्या नहीं समेटा है जन्मभूमि संस्थान ने ? धर्म, दर्शन, संस्कृति, पर्यावरण, सेवा, चिकित्सा, निराश्रितों को आश्रय, कला का सम्मान, समृद्ध वाचनालय, जहाँ इतिहास पुराण की दुर्लभ पुस्तकें संगृहित हैं, बच्चों की पाठशाल,सब कुछ बड़ा अच्छा लगा देख समझकर, ये ही तो कुछ ऐसे संस्थान हैं जिन्होंने हिन्दू धर्म को जीवित रखा हुआ है। मुझे अपने आप पर गर्व हुआ कि मैं इन सबका एक हिस्सा हूँ। समय का ध्यान आते ही मैं केशवदेव मंदिर की ओर मुड़ गई। उस दिन प्रभु का गुलाबी रंग का सिंगार था मनमोहक छवि हृदय के आकाश में उतरती जा रही थी। कहीं का दल था जो इस समय गा बजा रहा था, झूम झूमकर नृत्य करने वाली गोपी, तृतीय लिंग की थी किन्तु श्रृंगार ऐसा था कि शक करना मुश्किल था। उसकी त्वरा देखकर ही भान होता था कि यह शक्ति स्त्री सुलभ नहीं है।

कन्हैया तूने चुनरी मोरी भिगाई,
लाख टके की अंगिया भींग गई,
अंचरा मोर रंगाई
कन्हैया तूने चुनरी मोरी भिगाई

उसका समर्पण देख मन संसार की सुध-बुध भूलने लगा था। कुछ महिलाएँ सामने चबुतरे पर बैठी गा रहीं थीं, मैं दरवाजे से चिपकी सब कुछ देख-देखकर अपना जीवन धन्य करती रही। आज गवाक्ष में एक युवा पंडित बैठे हुए था, जिनका रंग गोरा, माथा ऊँचा, चेहरा गोल था। माथे पर बैष्णवी त्रिपुण्ड शोभा दे रहा था। वे दर्शनार्थियों को पंचामृत तुलसी दल देते जा रहे थे। मेरे हाथ में एक पेज का कागज था, मैं पेन से कुछ आवश्यक जानकारियाँ लिखती जा रही थी। पंडित जी को प्रणाम कर जब मैंने उनसे कुछ पूछा तब उन्होंने अति प्रसन्न होकर पूछा - ''आप क्या लिख रही हैं ?''

''जी महाराज! मैं एक लेखिका हूँ यहाँ से जाने के पश्चात् यात्रा संस्मरण लिखूंगी इसीलिए जानकारी एकत्र कर रही हूँ।'' मैंने संकोच सहित अपना उद्देश्य स्पष्ट किया।

''अच्छा तो आप लेखिका हैं'' ? मेरी पत्नी को भी लिखने का बड़ा शौक है, माता जी, मैं आपसे उनकी भेंट कराना चाहता हूँ''। उनके अंग अंग से उल्लास झर रहा हो जैसे।

''मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी अपनी बहन से मिलकर, बताइये कब ऐसा संयोग बनेगा'' ? मैं भी उत्सुक हो उठी।

''यदि समय हो तो आज ही बुला लूँ उन्हें पास में ही हमारा घर है।''

''आज तो क्षमा करें, हमें आगरे के लिए निकलना है। यदि समय रहते वापस आ गये तो शाम को मिलवा दीजिए''। मैंने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया।

''ठीक है मेरा नंबर नोट कर लीजिए सूचना मिलते ही मैं उन्हें बुलवा लूँगा। आप लोग घर जाकर आराम से मिल लीजिएगा''। उन्होंने स्वीकार कर लिया।

उनका नाम कृष्ण बिहारी पाठक ज्ञात हुआ। उपलब्ध सूचनाएँ संगृहित कर मैं बाहर निकली। इस मंदिर के बगल में ही गिरीराज जी महराज का मंदिर है। उस समय वहाँ पूजा अर्चना हो रही थी। भक्त श्री गोवर्धन जी की परिक्रमा के साथ आरती गा रहे थे। उनका विग्रह श्वेत संगमरमर पर काले पत्थर से बना है। परिक्रमा पथ बना हुआ है जिसकी परिक्रमा कर गोवर्धन महराज की परिक्रमा का फल प्राप्त हो सकता है। परिक्रमा पथ में दीवारों पर प्रभु के गोचारण की लीलाओं के चित्र बने हुए हैं। मंदिर के समक्ष एक छोटी सी पुष्प वाटिका है, जिसमें भाँति-भाँति के पुष्प मुस्करा रहे थे। भौंरे तितलियाँ उनका मुख चंुबन कर गुनगुना रहे थे।

मैंने पूजा में भाग लिया। इसके बाद महामाया माँ के दर्शन करते हुए गर्भगृह से होती भागवत् भवन में आई। यहाँ भी इस समय राधे कृष्ण की आरती हो रही थी। भक्तगण वाद्य संगीत में अपने कंठस्वर मिला रहे थे। मैंने श्री विग्रह की अनोखी सुन्दरता अपनी आँखों में भर ली

यह भवन आधुनिक भवन निर्माण कला का अन्यतम् उदाहरण है। 3 ग 3 की चैड़ाई, लंबाई वाले स्तंभों पर पूरी छत टिकी हुई है। स्तंभों पर अत्यंत उच्चकोटि की कलाकारी दृष्टव्य है। सारी दीवारों पर देश भर के प्राचीन कवियों लेखकों, भक्तों एवं अवतारों की सचित्र कथाएँ वर्णित है। रेखाचित्रों के द्वारा ऐसी भाव व्यंजना अन्यत्र दुर्लभ है। मुख्य द्वार की बाईं ओर माँ जगदम्बा का मनोहर मंदिर है। जिनकी एक झलक मात्र से ही प्राणी का उद्धार हो जाता है। मंदिर की दीवार पर बाईं ओर राजा सुरथ और दायीं और समाधि वैश्य की मूर्तियाँ स्थापित हैं। खंभों के ऊध्र्व भाग में श्री कृष्ण लीला की सुन्दर चित्रकारी देखते ही बनती है।

मधाई का नित्यानंद पर प्रहार, रामानुजाचार्य निम्वार्काचार्य, माधवाचार्य, कबीर, स्वामी रामदास, स्वामी रामतीर्थ, मधुमंगल सखा, स्वामी रामकृष्ण परम हंस, देवी महाकाली, महालक्ष्मी, महा सरस्वती के साथ ही सीता जी के भाई लक्ष्मीनिधि और भाभी सिद्धि कुआरी, कमैतिन बाई, मीराबाई, शखुबाई, कन्नड़ रामायण के रचयिता कुमार बाल्मिकी, श्री नरहरि, तमिल रामायण के रचयिता कवि सम्राट कम्बन, उपेन्द्र भंज (उड़िया के भानुभक्त) आदि महान् कलाकार व्यक्तियों के चित्र देखकर अपने लेखिका होने पर गर्व हो आया क्षण भर को

कक्ष के अंत में एक चबुतरा है, उस पर श्री जुगल किशोर बिड़ला, महामना मदन मोहन मालवीय जी, हनुमान् प्रसाद पोद्दार, अखंडानंद सरस्वती जी की आदमकद मूर्तियाँ रखी गईं हैं। जन्मभूमि के पुनरुद्धार हेतु जो तप इन महानुभावों ने किया उसके लिए विश्व भर के हिन्दू इनके आभारी हैं।

अब दर्शन करते हुए मैं दूसरी दीवार पर बने चित्रों के दर्शन करती राधे कृष्ण मंदिर की तरफ आने लगी। दीवारों पर, भक्त रैदास, गांधी जी द्वारा कुष्ठ रोगी की सेवा, श्री दत्तात्रेय एवं व्याघ्रपाद, श्रीमती तुंग विद्या जी वीणा वादन करती हुईं। हनुमान जी की प्रभु के ध्यान में निमग्न मूर्ति, राम वनवास के समय स्वयं के वस्त्र बुनते भरत जी चित्रित हैं। परिक्रमा पथ में ताम्रपत्र पर लिखित श्रीमद् भागवत् के दर्शन हुए।

सब ओर से आकर रस से भरी राधा रानी के सामने खड़ी हो गई। आरती के पश्चात् प्रसाद बंट रहा था। भक्तजन ढोल मंजीरे के साथ भजन गाने बैठ गये थे।

आज हमे आगरे के लिए निकलना है यह ध्यान आते ही मैंने स्वयं को सचेत किया और जल्दी ही धर्मशाले आ पहुँची। यहाँ सब लोग तैयार हो चुके थे। योगेश ने शर्मा जी को पहले ही फोन करके बुला लिया था। नाश्ता आदि रास्ते में करने का विचार कर, पानी की बोतले और बिस्कुट के साथ हम लोग विश्व के आश्चर्याें में एक, ताजमहल देखने आगरे के लिए निकल पड़े। चेकपोस्ट के अन्दर ऑटो आना वर्जित था, इसलिए शर्मा वहीं खड़ा था। उसने समय से हमें रेलवे स्टेशन पहुँचा दिया।

''बेटा प्रभात को फोन कर दो कि हम मथुरा में उतर गये हैं, नाहक ही चिन्ता कर रहा होगा''। डिब्बे में व्यवस्थित बैठ जाने के बाद मैंने कहा।

''माँ मैंने कल रात ही उसे बता दिया था''। ट्रेन ने गति पकड़ ली, आजकल टी.वी. में जोधा अकबर सीरियल आ रहा है। मुझे यह इतना पसंद है कि कहीं से भी समय पर आकर देख लेती हूँ। झगड़ा करने से भी पीछे नहीं हटती। टी.वी. पर सयाने और बच्चों का अधिकार रहता है। सयाने क्रिकेट मैच और समाचार के दीवाने हैं, बच्चे कार्टून के।

इसके अभिनेता अभिनेत्री दोनों ही महान् कलाकार हैं। सीरियल ऐतिहासिक दृष्टि से भले ही 99 प्रतिशत झूठ हो, उस समय की परिस्थितियों का चित्रण बहुत ही सटीक कर रहा है। उसे देख-देखकर आगरा देखने की लालसा बलवती होती जा रही थी। यूँ तो फरवरी 2012 में एक बार आगरा घूम गई थी, जब विश्व पुस्तक मेले में मेरी पाँच पुस्तकों का विमोचन और मेरा सम्मान हुआ था, परन्तु उस समय हम लोग गुड़गाँव से आगरा कार से गये थे। पूरे रास्ते मुझे उल्टियाँ होतीं रहीं, शरीर का हाल-बेहाल था, न तो किसी प्रकार की जानकारी नोट कर पाई और न वह सुखानुभूति प्राप्त कर सकी जो मुझे आगरे का ताज देखकर मिलनी थी। इस बार इसीलिए हमने ट्रेन की यात्रा पसंद की।

उस आगरे को दिल में बैठाना चाहती थी जहाँ 'सूर्य' के समान तेजस्वी कवि सूरदास ने जन्म लेकर श्री कृष्ण की बाल लीलाओं का जीवन्त वर्णन किया, ऐसा कि लोगों को उनके नेत्रहीन होने पर संदेह होता है। उनके पद आज भी वात्सल्य रस की धार बहा रहे हैं। उनके कारण ही साहित्य के नौ रसों में एक दसवा रस बात्सल्य रस जुड़ गया। कैसी मेधा होगी भइया तुम्हारी, जिसके आगे रामचरित के रचयिता महाकवि तुलसीदास चाँद जैसे कम प्रकाशवान कहे गये ?

कवि रत्न सत्यनारायण की नगरी आगरा, राजा लक्ष्मण सिंह सदल मिश्र, लल्लू लाल जी जिन्होंने पहली हिन्दी कहानी की रचना करने का गौरव प्राप्त किया। महाकवि गंग ने यहाँ अपने काव्य की धारा प्रवाहित की, आधुनिक युग में भी आगरा की पुण्यभूमि ने कई साहित्यकारों को जन्म दिया जैसे - बाबू गुलाब राय, कुंअर हनुमन्त सिंह, रघु पंडित शंकर शर्मा, सोम ठाकुर, शैल चतुर्वेदी आदि। ''क्या कभी उनकी तरह मुझे भी साहित्य जगत् में स्थान मिल पायेगा''? संकोच सहित प्रश्न उठा मेरे मन में। डिब्बे में बैठने का स्थान मिल गया था, मेरे दोनों बच्चे खेलने लगे थे। नमन अपने स्कूल के बाल गीत गाने लगा था। मैं खिड़की से बाहर भू-रचना, वनस्पतियों आदि का अध्ययन कर रही थी।

खेत समतल और ज्यादातर हरे-भरे दिखाई दे रहे थे। गन्ने की खेती ज्यादा दिखाई दी। बरसात का समय था इसलिए हरियाली थी। कल कारखाने थोड़ी थोड़ी दूर पर दिख जाते थे। मथुरा से महज 57 किलोमीटर दूर आगरा, घंटे भर से कुछ अधिक में हम लोग आगरा केन्ट पर उतरकर इधर-उधर के वातावरण पर दृष्टि डाल रहे थे। कोई बहुत बड़ा स्टेशन नहीं दिखा, किन्तु ऑटो की संख्या बहुत ज्यादा थी। हमने आगरा के प्रमुख दर्शनीय स्थलों को घूमने के बाद संध्या काल स्टेशन तक छोड़ने के लिये ऑटो कर लिया।

खाने-पीने लायक कुछ खास नहीं दिखा। दरअसल हम लोग मुख्य स्टेशन छोड़कर उतरे थे, जहाँ से सीढ़ियाँ चढ़े उतरे बिना कुछ कदम चल कर ही हम ऑटो स्टेण्ड पर पहुँच सकते थे। बच्चों को बिस्कुट आदि देकर अनिता ने मना दिया।

क्रमश:

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें